International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

**Special Issue 01 | Vol.: 12 | June 20, 2025 | Pages: 01–11 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |**

ICSSR| |National Seminar on "Indian Knowledge System: Education and Prosperity" Org. by Dhanauri P.G. College, Roorkee (28-29 Mar., 2025)

DOI : 10.5281/zenodo.15823926

# आधुनिक परिदृश्य में भारतीय प्राच्य ज्ञान सम्पदा

**एन० के० जोशी**
कुलपति एवं प्रोफेसर, श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय, बादशाहीथौल, टिहरी गढ़वाल
Email Id: drjoshimit@gmail.com

| *Received* : 04/03/2025 | ***1st BPR*** : 04/04/2025 | ***2nd BPR*** : 27/04/2025 | ***Accepted*** : 17/05/2025 |
|---|---|---|---|

**Abstract**

आधुनिक परिदृश्य में भारतीय प्राच्य ज्ञान के अध्ययन एवं उसकी प्रासंगिकता में उत्तरोत्तर वृद्धि होना इसकी उपादेयता की परिचायक है। प्राचीन भारतीय ज्ञान जिसमें वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, योग, ज्योतिष, वास्तु शास्त्र और संस्कृत साहित्य सम्मिलित हैं. ने मात्र भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व पर प्रभाव डाला है। वर्तमान में, जब तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति अपने चरम पर है. भारतीय प्राच्य ज्ञान की प्राचीन धारणाएँ जैसे योग, ध्यान और आयुर्वेद, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण मानी जा रही हैं। भारत में प्राच्य ज्ञान की पुनर्रचना के प्रयास हो रहे हैं, जिससे इसकी प्राचीन विधाओं को आधुनिक संदर्भ में पुनर्जीवित किया जा सके। अनेक भारतीय और विदेशी संस्थान इन विषयों पर शोध कर रहे हैं एवं उन्हें वैश्विक स्तर पर विस्तारित करने का प्रयास कर रहे हैं। यह ज्ञान मात्र आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से ही महत्वपूर्ण नहीं है, अपितु वैश्विक समस्याओं जैसे पर्यावरण, स्वास्थ्य और समाज में संतुलन बनाने में भी सहायक हो सकता है। यह ज्ञान, जो वेदों, उपनिषदों, आयुर्वेद, योग और संस्कृत साहित्य जैसे प्राचीन स्रोतों से उत्पन्न हुआ है, वर्तमान में भी अत्यधिक मूल्यवान माना जा रहा है। जहां एक ओर तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति हो रही है, वहीं दूसरी ओर मनुष्य मानसिक शांति, स्वास्थ्य और संतुलन के लिए प्राचीन भारतीय विधाओं की ओर लौट रहा है। भारतीय प्राच्य ज्ञान धार्मिक एवं आध्यात्मिक धरोहर होने के साथ ही जीवन जीने की एक समग्र पद्धति प्रस्तुत करता है। योग और ध्यान जैसी विधाओं ने पूरी दुनिया में लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन किए हैं, और आयुर्वेद ने प्राकृतिक चिकित्सा और स्वस्थ जीवनशैली के प्रति एक नई जागरूकता पैदा की है। वर्तमान समय में. जब सम्पूर्ण विश्व जलवायु परिवर्तन, तनाव और असंतुलित जीवन शैली जैसी चुनौतियों से जूझ रहा है, भारतीय प्राच्य ज्ञान के सिद्धांत और विधाएँ समाधान के रूप में उभर रही हैं। भारत और विश्व के अन्य देशों में भी अनेक अनुसंधान और शैक्षिक संस्थान इस ज्ञान की गहराई को समझने और उसे आधुनिक संदर्भ में लागू करने के प्रयास कर रहे है। इस प्रकार भारतीय प्राच्य ज्ञान का अध्ययन मात्र सांस्कृतिक विरासत की पुनर्रचना नहीं है, अपितु यह एक समृद्ध और अति प्रासंगिक जीवन पद्धति का पुनरुत्थान है, जो वर्तमान और भविष्य में मानवता के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। भारतीय प्राच्य ज्ञान केवल प्राचीन धरोहर नहीं है, अपितु एक समग्र जीवन दर्शन है जो आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना शताब्दियों पूर्व था। इसके सिद्धांत और विधाएँ, जो मानसिक शांति. शारीरिक स्वास्थ्य और पर्यावरणीय संतुलन को बढ़ावा देते हैं, आधुनिक समाज की जटिल चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करते हैं। इस ज्ञान की पुनः खोज और प्रसार मात्र भारतीय संस्कृति की धरोहर को ही समृद्ध नहीं करेगा, अपितु वैश्विक मानवता को भी नई दिशा और संतुलन प्रदान करेगा। इस प्रकार भारतीय प्राच्य ज्ञान का अध्ययन और उसका व्यावहारिक अनुप्रयोग भविष्य में एक सतत और समृद्ध समाज के निर्माण में सहायक हो सकता है।

***Keywords*****:** प्राच्य ज्ञान**,** विज्ञान**,** संस्कृत वाङ्मय**,** वेद**,** उपनिषद् ।

## परिचय

भारत की प्राचीनतम और समृद्धतम साहित्यिक धरोहर संस्कृत वाङ्मय में विज्ञान और तकनीकी ज्ञान के असंख्य स्रोत समाहित हैं। यद्यपि संस्कृत का प्राचीन साहित्य मुख्यतः धार्मिक, आध्यात्मिक और दार्शनिक विचारों से समृद्ध है, तथापि इसमें वैज्ञानिक विचारधाराओं का व्यापक और गहन वर्णन मिलताहै। वेद, उपनिषद्, पुराण, आयुर्वेद, ज्योतिष, गणित, खगोलशास्त्र और वास्तुशास्त्र जैसी अनेक विधाओं में वैज्ञानिक चिंतन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा के केंद्रीय आधार के रूप में सम्मिलित किया गया है, यदि शिक्षा का तात्पर्य मनुष्य को जीवनयापन में सफल बनाना है तो आज तक शिक्षा के क्षेत्र में हमने विलक्षण प्रगति की है किन्तु शिक्षा का

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

**Special Issue 01 | Vol.: 12 | June 20, 2025 | Pages: 01–11 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |**

उद्देश्य जीवन को सार्थक करना है और 'भारतीय पुरातन ज्ञान इसी धारणा पर अवलंबित है। छान्दोग्योपनिषद में चिकित्सा विज्ञान, धातु विज्ञान, कृषि विज्ञान, वस्त्र विज्ञान, संगीत, नाट्यवेद, कर्मकांड के साथ-साथ बहुविध जीवनोपयोगी तकनीकी एवं व्यावसायिक सैंतीस और विषयों की चर्चा है। इस उपनिषद् में सनत कुमार ऋषि नारद से पूछते हैं कि वे किस विषय में निपुण हैं? नारद निम्नलिखित सूची देते हैं चार वेद, पांचवा वेद, (इतिहास पुराण), वेदांग (स्वर विज्ञान, व्युत्पत्ति, व्याकरण, छन्दशास्त्र, ज्यामिति, समय निर्धारण, समारोह) तर्कशास्त्र, पृथ्वी विज्ञान (भौतिक, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान) देवताओं का ज्ञान (देव), पूर्वजों का ज्ञान (पितृ), सर्पों का ज्ञान (सर्प) एवं सितारों का ज्ञान (ज्योतिष) आदि। सनत कुमार बताते हैं कि इस सूची में आत्म-जागरुकता (ब्रह्म-विद्या) शामिल नहीं है, इसलिए नारद का ज्ञान सतही है, जिसमें समझ और आत्मसात करने की कमी है, जो अनुप्रयोग को रोकता है। इस तरह भारत में शैक्षिक पाठ् यक्रम की पहली सूची छांदोग्य उपनिषद् से आती है। भारत ने अपने ज्ञान का प्रसार बलपूर्वक नहीं अपितु ग्रंथों के अनुवाद और प्रबोध द्वारा किया। भारतीय संस्कृति और सभ्यता का इस तरह निरंतर प्रवाहित होते रहना शोध का विषय है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक दृष्टि, धर्म एवं कर्म का विलक्षण समन्वय है। संस्कृत वाङ्मय में विज्ञान की जड़ें अत्यंत गहरी हैं। इसमें मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़े वैज्ञानिक सिद्धांतों का व्यापक रूप से वर्णन किया गया है. जो आधुनिक विज्ञान के विकास में सहायक सिद्ध हुए हैं। प्राचीन भारतीय विद्वानों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण और उनके अनुसंधान आज भी प्रासंगिक है और वैश्विक स्तर पर सराहे जा रहे हैं। संस्कृत वाङ्मय का अध्ययन मात्र सांस्कृतिक दृष्टिकोण से ही महत्वपूर्ण नहीं है, अपितु यह विज्ञान की प्राचीन धरोहर को समझने और आगे बढ़ाने में भी सहायक हो सकता है। प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा में. आयुर्वेद, ज्योतिष, पर्यावरण, कृषि, अर्थशास्त्र, दर्शन, शिल्पविज्ञान, कृषिविज्ञान, धातुविज्ञान आदि का विशेष महत्त्व है।

## 1. प्राच्य विज्ञान एवं प्राचीन गणित

### महर्षि भारद्वाज भारतीय विज्ञान और दर्शन के महान ज्ञाता

महर्षि भारद्वाज प्राचीन भारतीय विज्ञान के अग्रणी ऋषियों में से एक थे। उन्हें विशेष रूप से आयुर्वेद एवं विमान शास्त्र के लिए जाना जाता है। महर्षि भारद्वाज को भूलोक पर आयुर्वेद का जनक माना जाता है। ऋग्वेद और अथर्ववेद में मंत्रों के द्रष्टा के रूप में इनके चिकित्सा विज्ञान से जुड़े कार्यों का उल्लेख है। उनके द्वारा लिखित ग्रंथ 'विमान संहिता' में हवाई यानों की संरचना, उड़ान विधियों और ऊर्जाओं के उपयोग का उल्लेख मिलता है। महर्षि भारद्वाज ने विज्ञान को आध्यात्मिकता के साथ जोड़कर देखा और प्रयोगों द्वारा सिद्ध किया कि ब्रह्मांडीय ऊर्जा का प्रभाव जीवन के हर क्षेत्र में होता है। उनके सिद्धांतों का आधुनिक विज्ञान में भी महत्वपूर्ण स्थान है. विशेष रूप से आयुर्वेद और ऊर्जा प्रबंधन में। उन्होंने विभिन्न वैज्ञानिक ग्रंथों की रचना की, जिनमें भारद्वाज संहिता, विमान संहिता, यन्त्र सर्वस्व और आयुर्वेदिक संहिताएँ प्रमुख हैं। महर्षि भारद्वाज द्वारा विकसित वैज्ञानिक सिद्धांत आधुनिक विज्ञान से मेल खाते हैं। उनके द्वारा प्रतिपादित आयुर्वेद, विमान शास्त्र, धातु विज्ञान और खगोल शास्त्र आज भी प्रासंगिक हैं। उनके सिद्धांत केवल तकनीकी नहीं, बल्कि प्रकृति के साथसामंजस्य बिठाने की जीवनशैली को भी दर्शाते हैं। प्राचीन भारतीय विज्ञान केवल खोज तक सीमित नहीं था. अपितु इसका उपयोग समाज के कल्याण के लिए किया जाता था।

### वैदिक वाङ्मय में विमान एवं अंतरिक्ष यात्रा

विमान शास्त्र प्राचीन भारतीय ग्रंथों और प्राच्य ज्ञान का एक अद्भुत उदाहरण हैं। महर्षि भारद्वाज द्वारा रचित 'यन्त्र सर्वस्व' नामक ग्रन्थ के अन्तर्गत वैमानिक प्रकरण नामक एक अध्याय प्राप्त होता है। उसकी पाण्डुलिपि के आधार पर गृहद विमानशास्त्र नामक ग्रन्थ स्वामी ब्रहामुनि को संपादकत्व में प्रकाशित किया गया, जिसके महत्त्वपूर्ण बिन्दु संक्षेप में इस प्रकार हैं-

- वृहद विमान शास्त्र के अनुसार विमान शास्त्र विषय पर प्राचीन काल में नारायण ऋषि की विमानचन्द्रिका, ऋषि शौनक का व्योमयान-तंत्र, ऋषि गर्ग का यन्त्र कल्प, वाचस्पति का यानबिन्दु चाकायणि की खेटयान प्रदीपिका एवं पुण्डिनाथ का व्योमगानप्रकाश आदि प्रमुख ग्रन्थ है।
- इस ग्रन्थ के अनुसार महर्षि भारद्वाज ने स्वीकार किया है कि यह विमान विद्या वैदिक वाङ्मय का सार है। उनका कथन है कि वेद रूपी समुद्र के मन्धन से जो नवनीत प्राप्त हुआ उसके आधार पर 500 सूत्रों से युक्त 'वैमानिक प्रकरण जो कि व्योमयान-प्रधान है, प्रस्तुत किया जा रहा है।
- नारायण आदि अनेक आचार्यों ने पृथ्वी, जल एवं अंतरिक्ष तीनों में चल सकने वाले विमानों का वर्णन किया है। इन विमानों के द्वारा देश-देशान्तर द्वीप द्वीपान्तर एवं लोक-लोकान्तर तक की यात्रा की जा सकती है:-

**पृथिव्यप्स्वन्तरिक्षेषु, खगवद् वेगतः स्वयम्।**
**यः समर्थो भवेद् गन्तुं स विमान इति स्मृतम् ।।**
**देशाद् देशान्तरं तद्वद्, द्वीपाद द्वीपान्तरं तथा**
**लोकात लोकान्तरं चापि योऽम्बरे गन्तुमर्हति**
**स विमान इति प्रोक्तः, खेटशास्त्रविशारदैः।। वृहद्विमानशास्त्र- पृष्ठ 7**

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

**Special Issue 01 | Vol.: 12 | June 20, 2025 | Pages: 01–11 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |**

- इसमें विमानबालन के लिए विमान के 32 रहस्यों को जानना आवश्यक बताया गया है।
- इसके साथ पाँच प्रकार के आकाशीय मार्गों का ज्ञान, आकाशीय आवर्त, सौर ऊर्जा से विमान-चालन, शिरः कीलक यंत्र (बिजली गिरने पर विमान सुरक्षित रहे), विमानों के मान्त्रिक. तान्त्रिक और कृतक भेद, विमान की रचना, विमान के अंग, विमान की 12 प्रकार की गतियों, विमान के 32 यंत्र, विमान में पारद (पारा) का प्रयोग आदि का वृहद वर्णन प्राप्त होता है।

**वैदिक परंपरा में जल संरक्षण की अवधारणा** को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। जल को जीवन का मूल स्रोत और पवित्र तत्व माना गया है। ऋग्वेद, यजुर्वेद आदि में जल को देवतुल्य स्थान दिया गया है और स्वच्छ, संरक्षित जल के उपयोग पर जोर दिया गया है। नदी पूजन, वर्षा जल संचयन, भूमिगत जल संरक्षण जैसे उपायों का उल्लेख वेदों में मिलता है। प्राचीन भारतीय विज्ञान में जल संरचना, उसकी ऊर्जा और जल स्रोतों की पवित्रता पर प्रकाश डाला गया है। गंगा जल की शुद्धता और उसके जीवाणुरोधी गुणों का उल्लेख भी वैज्ञानिक आधार पर किया गया है। कुंभ और महाकुंभ जैसे पर्यो में नदियों के जल को शुद्धिकरण और आध्यात्मिक जागृत्ति का माध्यम माना जाता है। जल तत्व से मानसिक और शारीरिक शुद्धि की मान्यता रही है। ऋषियों ने जल के संचित रहने की प्रक्रिया को समझा और उसे संरक्षित करने के लिए सरोवर, जलाशय और भूमिगत जल भंडारण की परंपरा विकसित की। आधुनिक समय में भी इस पारंपरिक ज्ञान को अपनाकर जल संकट से निपटा जा सकता है।

**नियोग-संतानों का विज्ञान** - भारतीय प्राचीन वैज्ञानिक विचारों का महत्वपूर्ण हिस्सा है। वेदों में वर्णित विज्ञान ने अनेकों चमत्कारी प्रयोगों को जन्म दिया, जिनमें अर्पिशत (क्लोनिंग), अयोनिजा (बिना प्रसव) और निसर्ग (बिना नर-मादा संसर्ग) संतानों की उत्पत्ति का उल्लेख है। इन तकनीकों की विवेचना ने यह सिद्ध किया कि प्राचीन भारतीय ऋषियों ने विज्ञान और चिकित्सा में अद्वितीय शोध किए थे. जिनका प्रमाण आज भी विभिन्न शास्त्रों और ग्रंथों में मिलता है। ऋग्वेद में विशेष रूप से रुनूस बंधुओं द्वारा गायों और घोड़ों की क्लोनिंग, और महाभारत में विभिन्न पात्रों की अयोनिजा उत्पत्ति के उदाहरण प्रस्तुत किए गए है। इन प्रयासों ने दिखाया कि विज्ञान का विकास प्राचीन काल में ही हुआ था. जो आज के आधुनिक विज्ञान से कहीं अधिक विस्तृत और गहन था। इसके अतिरिक्त, महाभारत में नियोग द्वारा संतानों की उत्पत्ति की प्रक्रिया भी प्राचीन भारत में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रमाण है। इस प्रणाली का उपयोग करने से कई महान राजकुमारों और महापुरुषों की उत्पत्ति हुई, जैसे पांडव और धृतराष्ट्रः। प्राचीन भारतीय शल्य चिकित्सा का विशेष रूप से सुश्रुत द्वारा विकसित शल्य यंत्रों और उनकी विधियों के माध्यम से, चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान है। उनकी शल्य क्रियाओं ने न केवल शारीरिक उपचार में क्रांति की अपितु प्लास्टिक सर्जरी का प्रारंभ भी किया। इन सभी प्रयोगों से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय विज्ञान की धरोहर प्राचीन समय से अत्यंत समृद्ध और उन्नत थी, और इसे आधुनिक विज्ञान से जोड़ा जाना चाहिए।

**प्राचीन भारत में शून्य और अनंत की अवधारणाएं**-प्राचीन भारतीय मनीषियों ने प्रकृति को गहराई से समझने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया था। उन्होंने शून्य, अनंत, गणित, गति के नियमों, और ब्रह्मांडीय संरचनाओं को समझने में सफलता प्राप्त की थी। शून्य और अनंत की अवधारणाएं वेदों में भी दिखाई देती हैं, जैसे यजुर्वेद में शून्य को परमात्मा से जोड़कर देखा गया है। शून्य का विलोम अनंत है, जिसे उन्होंने सिद्धांत रूप में प्रस्तुत किया, जो आज भी आधुनिक विज्ञान में प्रासंगिक है। भारत में शून्य, अनंत, दशमलव पद्धति और दीर्घ संख्याओं की अवधारणाएं प्राचीन काल में ही उत्पन्न हो गई थीं। उदाहरण स्वरूप, भारतीय गणितज्ञों ने दीर्घ संख्याओं की रचना की थी, जो आज तक आधुनिक गणित में प्रयुक्त नहीं हुई हैं। भारतीय संख्या पद्धति ने वैश्विक विज्ञान को महत्वपूर्ण योगदान दिया।

**वैदिक काल में गति के नियमों का प्रतिपादन** - वैदिक काल में भारतीय मनीषियों ने गति के नियमों और सूक्ष्म संसार के सिद्धांतों का गहन अध्ययन किया था। उन्होंने यह समझ लिया था कि भौतिक वस्तुएं वाह्य बलों से प्रभावित होकर गति करती है, जैसा महर्षि वेदव्यास और महर्षि कणाद ने अपने ग्रंथों में प्रतिपादित किया। कणाद ने गति के तीन मुख्य नियमों का उल्लेख किया 1) बाह्य बल से गति में परिवर्तन होता है, 2) बल की दिशा में गति होती है, और 3) क्रिया और प्रतिक्रिया बराबर और परस्पर विरोधी होती है। इन सिद्धांतों को न्यूटन ने हजारों साल बाद अपने नाम से प्रस्तुत किया। इसके अलावा, वैदिक काल में सूक्ष्म संसार के सिद्धांत भी प्रतिपादित किए गए थे। भारतीय मनीषियों ने यह जाना था कि सूक्ष्म वस्तुओं और प्रक्रियाओं का अध्ययन करना बहुत अधिक कठिन है और इनका विश्लेषण दिक्काल के सिद्धांतों के साथ नहीं किया जा सकता। इन्होंने यह भी प्रतिपादित किया कि किसी सूक्ष्म वस्तु का स्थान, स्थिति और गति एक साथ शुद्ध रूप से निर्धारित नहीं की जा सकती, जो बाद में हिसनबर्ग के अनिश्चितता सिद्धांत और बोहर के परिपूरक सिद्धांत के रूप में आधुनिक विज्ञान में प्रतिपादित हुआ।

**वैदिक क्वांटम सिद्धांत** - प्राचीन भारतीय मनीषियों ने सूक्ष्म और स्थूल वस्तुओं के बीच अंतर को समझा था और यह महसूस किया था कि सूक्ष्म स्तर पर मान निर्धारण की अवधारणा में अनिश्चितता होती है। इस विचार को बाद में हेसनबर्ग और बोहर के द्वारा आधुनिक क्वांटम सिद्धांतों में प्रस्तुत किया गया। प्राचीन भारतीय मनीषियों ने विज्ञान और गणित के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया था, जिनकी अवधारणाओं ने आधुनिक विज्ञान को प्रभावित किया। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया था कि शुद्ध विज्ञान और आत्मज्ञान के माध्यम से प्रकृति के रहस्यों को उद्घाटित किया जा सकता है।

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

**Special Issue 01 | Vol.: 12 | June 20, 2025 | Pages: 01–11 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |**

## 2. आयुर्वेद एवं चिकित्सा विज्ञान

प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा में आयुर्वेद का महत्वपूर्ण स्थान है। आयुर्वेद, एक प्राचीन भारतीय चिकित्सा प्रणाली है. जो आज भी एक लोकप्रिय और प्रभावी उपचार पद्धति के रूप में प्रयुक्त हो रही है। प्राकृतिक चिकित्सा और समग्र स्वास्थ्य के बढ़ते महत्व के कारण आयुर्वेदिक उपचार और सिद्धांतों की मांग तेजी से बढ़ी है। योग और ध्यान जो आयुर्वेद का एक अभिन्न अंग हैं, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। आयुर्वेद शास्त्र जिसके द्वारा मनुष्य आयु प्राप्त करता है, के विषय में आचार्य सुश्रुत ने लिखा है **'आयुरास्मत विद्यते अनेन वा आयुर्विन्दतीति आयुर्वेदः।** मनुष्य जीवन को सुखमय बनाने के लिए, मनुष्य की स्वास्थ्य रक्षा के लिए तथा रोगों के निवारणार्थ महर्षियों ने अपने अनुभव तथा प्रयोग से आयुर्वेद शास्त्र का प्रणयन किया। आयुर्वेद में अनेक प्रकार के रोगों के निवारण के लिए उपयोगी औषधियों का वर्णन है। आयुर्वेद 'अथर्ववेद' का उपांग है, आयुर्वेद के आदिम उपदेष्टा सृष्टिकर्ता ब्रह्मा थे, यह ज्ञान प्रारम्भ में देवलोक तक ही सीमित था। कालान्तर में मानव हित के लिए इन्द्रादि देवों ने इस ज्ञान को प्राप्त किया तथा उसका प्रसार पृथ्वी पर किया। ब्रह्मा जी ने आयुर्वेदशास्त्र को आठ अंगों में विभाजित किया-शल्य, शालाक्य, कायचिकित्सा, भूतविधा, कौमारभृत्य, अगदतन्त्र, रसायन एवं वाजीकरण। 'चरकसंहिता आयुर्वेदावतरण के अनुसार सर्वप्रथम ब्रह्मा से प्रजापति ने, प्रजापति से अश्विनीकुमारों ने, अश्विनीकुमारी से इन्द्र ने तथा इन्द्र से भारद्वाज ने आयुर्वेद की मूल्यवान ज्ञान संपदा को अर्जित किया, भारद्वाज ऋषि से अन्य ऋषियों को यह ज्ञान संपदा प्राप्त हुई। इसी परम्परा में 'पुनर्वसु आत्रेय' थे, जिन्होंने यह ज्ञान अपने छः शिष्यों को प्रदान किया। पुनर्वसु आत्रेय के उपदेशों को तन्त्र (संहिता) स्वरूप सर्वप्रथम अग्निवेश ने दिया । आचार्य चरक ने 'अग्निवेशतन्त्र पर भाष्य लिखा तथा वह भाष्य 'चरकसंहिता' नाम से विख्यात हुआ।

भारतीय ज्ञान परम्परा में आयुर्वेद विज्ञान का विशेष स्थान है। आयुर्वेद में वर्णित ऋतुचर्या, रात्रिचर्या, दिनचर्या आदि के प्रयोग से मनुष्य जीवन को निरोगी तथा स्वस्थ रखा जाता है। वेदों में देवताओं की स्तुति, औषधियों के वर्णन इत्यादि से रोगों के निवारणार्थ सूक्त तथा मन्त्र प्राप्त होते है, जिनमें औषधियों के वर्णन के साथ-साथ देव से सम्बन्धित रोगों से छुटकारा पाने के लिए प्रार्थना की जाती है । अथर्ववेद के प्रथम कांड के 10 वें सूक्त में वरुण देव से जलोदर रोग से मुक्ति की कामना का वर्णन है, तथा 12 वें सूक्त में सूर्य देव से विभिन्न रोगों से छुटकारा पाने के लिए स्तुति की है। अथर्ववेद के छठे काण्ड के 57 वें सूक्त में औषधियों का वर्णन मिलता है। अर्थर्ववेद में ही हृदय रोग, क्षय रोग आदि के वर्णन के साथ औषधियों का वर्णन प्राप्त होता है। वैदिक कालीन चिकित्सा विज्ञान स्वास्थ्य की दृष्टि से अति उपयोगी रहा है।

अश्विनी कुमारों को ऋग्वेद में प्रथम शल्य चिकित्सक माना गया है तथा वर्णित किया गया है कि अश्विनी कुमारों ने वामदेव एवम हिरण्यस्ता को शल्य क्रिया द्वारा उत्पन्न किया था तथा रजस्वा एवम च्यवन के नेत्रों की एवं त्रसंद के कान की शल्य चिकित्सा की थी। अश्विनी कुमारों द्वारा ही शियाव्य के क्षतिग्रस्त अंगों को शल्य क्रिया से जोड़ा गया तथा बधरीमती के वन्ध्यापन को दूर किया था। धनवंतरि के शिष्य सुश्रुत को ऋषियों में प्रथम शल्य चिकित्सक माना जाता है। सुश्रुत द्वारा रचित सुश्रुत संहिता में 101 शल्य यंत्रो की रचना एवम उपयोग का विस्तृत विवरण है। सुश्रुत द्वारा ही प्लास्टिक शल्य चिकित्सा का प्रथम प्रदर्शन कटे कान को कान के नीचे की त्वचा से पुनः जोड़ करनिर्मित किया था। प्लास्टिक शल्य चिकित्सा विधि द्वारा उन्होंने एक सिपाही के क्षतिग्रस्त नेत्र का पुनः निर्माण किया था। वेदों में वर्णित किया गया है कि मूल स्वास्थ्य विज्ञान, आयुर्वेद से भी कहीं अधिक श्रेष्ठ था। इस विज्ञान को वैदिक युग में मनु संवत (24000 ईसा पूर्व) के काल में विकसित किया गया था। ऋग्वेद (1-116-10) में अश्वनी कुमारों द्वारा वृद्ध ऋषि व्यवन को पुनः युवा बनाने का उल्लेख मिलता है।

आयुर्वेद संहिताओं में वर्णित दिनचर्या, ऋतुचर्या के अनुसार मौसम में बदलाव के कारण होने वाले मानसिक और शारीरिक प्रभावों का मुकाबला करने के लिए जीवनशैली और आयुर्वेदिक आहार का वर्णन है। इसके अनुसार ऋतुचर्या में बताये नियमों का पालन करने से तीनों दोष (वात, पित्त एवं कफ) संतुलित और व्यक्ति मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रहता है। प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धतियों में रासायनिक रूप से निर्मित नैनो कणों और भस्म (दहन किए गए धातु नैनो कणों) तथा हरे नैनो कणों के लाभ एवं उपयोग बताये गये हैं। प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धतियों जिसे योग के संदर्भमें समझाया गया है। यह शरीर में जीवनदायिनी ऊर्जा के प्रवाह को दर्शाता है। हमारे उपनिषदों में 72,000 नाड़ियों का उल्लेख है, जिनमें इड़ा, पिङ्गला और सुषुम्ना प्रमुख है, जो ऊर्जा के प्रवाह को नियंत्रित करती हैं। योग इन नाड़ियों के बीच ऊर्जा का संतुलन स्थापित करता है, जो शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए जरूरी है।

## 3. ज्योतिष और खगोलशास्त्र

भारतीय ज्योतिष और खगोलशास्त्र के सिद्धांत, जिनकी जड़ें वेदों में पाई जाती है, आज भी मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल रहे हैं। इसके अन्तर्गत ग्रहों की स्थिति, नक्षत्रों की गणना और उनके प्रभावों का अध्ययन आज भी किया जाता है।

ज्योतिष शास्त्र को छः वेदांगों में वेदरूपी पुरुष का नेत्र कहा जाता है- 'ज्योतिषामयनं चक्षुः। जिस प्रकार मनुष्य को प्रत्यक्ष ज्ञान के लिए नेत्रों की आवश्यकता होती है. उसी प्रकार वेदों के ज्ञान के लिए ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान आवश्यक है, ज्योतिष शास्त्र एक विज्ञान है जो हमें भूगोल तथा खगोलीय ज्ञान प्रदान करता है। ज्योतिष शास्त्र ब्रह्मा जी से उत्पन्न हुआ। यह ज्ञान ब्रह्मा जी ने

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

**Special Issue 01 | Vol.: 12 | June 20, 2025 | Pages: 01–11 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |**

नारद जी को दिया, इसी परम्परा में चन्द्रमा से यह ज्ञान शौनकादि ऋषियों को प्राप्त हुआ। नारायण ने रोमक तथा महर्षि वशिष्ठ को, वशिष्ठ ऋषि से माण्डव्य को तथा सूर्य ने मय को ज्योतिष शास्त्र की ज्ञानराशि प्रदान की।

**ब्रह्मा प्राह च नारदाय, हिमगुर्यच्छौनकायामलं, (सिद्धान्ततत्वविवेक / मानाध्याय / 165)**
**माण्डव्याय वशिष्ठसंज्ञकमुतिः सूर्यो मयायाह यत ।।**

इनके उपरान्त ज्योतिषशास्त्र के अष्टादश प्रवर्तक माने जाते है सूर्य, पितामह, वेदव्यास, वशिष्ठ, अत्ति, पराशर, कश्यप, नारद, गर्ग, मरीचि, मनु, अंगिरा, लोमश, पौलिश, च्यवन, यवन, भृगु तथा शौनकादि। वेदों में जहाँ यज्ञों का सर्वोपरि स्थान है, वहीं ज्योतिष शास्त्र के ज्ञान बिना यज्ञ असम्भव हैं। ज्योतिषके ज्ञान से ही यज्ञों को यथार्थ रूप को जाना जा सकता है। वैदिक यज्ञों के सम्पादन के लिए समय-शुद्धि, मुहूर्त तथा माह को जानना आवश्यक है। ज्योतिष शास्त्र हमें काल चक्र (समय), ग्रहों की गणना, ग्रहों की गति का ज्ञान, संवत्सर विभाग (उत्तरायण तथा दक्षिणायन), ऋतु, शुभ तथा अशुभमुहूर्ती का ज्ञान कराता है, जो हर प्रकार से मानय जीवन से सम्बद्ध है। ज्योतिष विज्ञान जहाँ ग्रहों की गति, काल, आदि का ज्ञान कराता है. वहीं वर्तमान में अपनी विश्वसनीयता को भी प्रकट करता है, जिसमें समुद्र में ज्वार-भाटा आना, सूर्य, चन्द्र ग्रहण आदि शामिल हैं जो ज्योतिष के निर्धारित काल में ही होते हैं।

## 4. शिल्प विज्ञान

वैदिक वाङ्मय में शिल्प विज्ञान का विशेष उल्लेख मिलता है। शिल्प विज्ञान, जो वर्तमान में इंजीनियरिंग, निर्माण कला और हस्तशिल्प के रूप में समझा जा सकता है, वैदिक युग से ही एक उन्नत और व्यवस्थित विज्ञान के रूप में विकसित हुआ था। वैदिक साहित्य में शिल्प विज्ञान और इसके विभिन्न आयामों का विवरण मिलता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारतीय समाज में यह ज्ञान अत्यधिक महत्व रखता था। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में विभिन्न प्रकार केनिर्माण कार्यों, स्थापत्य कला, धातु विज्ञान, और हस्तशिल्प से संबंधित संदर्भ मिलते हैं। इन ग्रंथों में भवन निर्माण, यज्ञ वेदियों, नगरों और मंदिरों के निर्माण, और धातुओं के प्रयोग के विस्तृत विवरण प्राप्त होते हैं तथा शिल्प-शिल्पियों का भी विस्तार से उल्लेख प्राप्त होता है। यजुर्वेद के 30वें अध्याय में शिल्प विज्ञान का भी वर्णन है। शिल्प विज्ञान वैदिक विज्ञान है जो वेदों की भाँति प्राचीन है। इसमें मूर्तिकला तथा वास्तुशास्त्र के अनुसार भवन दुर्ग आदि के निर्माण का वर्णन है। ऋग्वेद में शिल्प को कारू कहा जाता है- 'कारुरहं ततो भिषग, ऋग 9/112/3 तथा यजुर्वेद में शिल्प को वैश्वदेव कहा गया है- 'शिल्पो वैश्वदेवः तथा शिल्प विज्ञान में सभी प्रकार की कलाएँ जैसे हस्तशिल्प, चित्रकला, आभूषणकला, रथ निर्माण आदि सम्मिलित है। ऋग्वेद में उत्तम कोटि की शिल्पकला के लिए सुशिल्प कहा गया है- **सुशिल्पे बृहती मही.। (ऋग्० (9/5) / 6 )** वेदों में शिल्प सम्बन्धी यन्त्रों का वर्णन प्राप्त यजुर्वेद में शरीर रूपी यन्त्र का ज्ञान प्राप्त करने का निर्देश है-

**तन्वो यन्त्रमशीय ( 4pi*pi * 0 4/18)**

तैत्तिरीय संहिता वर्णन है जिसमें वातयन्त्र, त्रऋतु-यंत्र, दिग्यन्त्र, तेजोयंत्र, ओजोयन्त्र सम्मिलित हैं जो वायु विज्ञान, ऋतुविज्ञान, दिशा विज्ञान, प्रकाश तथा ऊर्जा सम्बन्धी यंत्रों से संबद्ध हैं-'वातानां यन्त्राय, ऋतूनां यन्त्राय, दिशां यन्त्राय, तेजसे यन्त्राय, ओजसे यन्त्राय। (तैति. ((1/8) / 1) / 2 )

वेदों में उद्योगों का वर्णन है। ऋग्वेद में नवीन उद्योग लगाने का निर्देश है जिनसे व्यक्ति तथा यश की प्राप्ति होती है। जैसे वस्त्र उद्योग तथा अनेक गृह-उद्योग आदि, 'अग्ने सनये धनायां, यशसं कारूं कृणुहि. । ऋष्याम कर्मापसा नवेन, (3tq + (- 1/31) / 8)

## 5. कृषि विज्ञान एवं पारंपरिक खेती

भारतीय कृषि परंपराओं में जैविक खेती और प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करने पर बल दिया गया है। प्राचीन भारतीय कृषि शास्त्र में वर्णित विधियों, जैसे पारंपरिक फसल चक, जैविक खाद का उपयोग और जल संरक्षण वर्तमान समय में पुनः लोकप्रिय हो रही हैं, विशेष रूप से सतत कृषि के संदर्भ में। मनुष्य का जीवन अन्न पर निर्भर है तथा अन्न कृषि से उत्पन्न होता है। कृषि ही मनुष्य जीवन का आधार है। सृष्टि उत्पत्ति के साथ ही अन्न तथा कृषि का विकास हुआ। अथर्ववेद के तृतीय काण्ड के 17वें सूक्त में वर्णन प्राप्त होता है कि सर्वप्रथम इन्द्र और पूषा देवों को कृषि के कार्य में लगाया गया था। शतपथ ब्राह्मण में कृषि कार्य का वर्णन चार शब्दों में है-

कृषन्तः, वपन्तः, लुनन्तः मृणन्तः ।'
कर्षण, खेत की जुताई करना, वपन, बीज बोने की किया
लवन, बीज पकने पर खेत की कटाई, मर्दैन मडाई करके अन्न प्राप्त करना
अथर्ववेद में कहा गया है-जीवन्ति स्वधयाउऽन्नेन मर्त्याः, (अथर्व. (12/1) / 12 )

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

**Special Issue 01 | Vol.: 12 | June 20, 2025 | Pages: 01–11 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |**

अन्न ही जीवन का आधार है। अन्न के बिना जीवन जीना असम्भव अथर्ववेद में कृषि विकास का वर्णन मिलता है कि राजा वेन के पुत्र पृथु ने कृषि विद्या का आविष्कार किया तथा अनेक प्रकार के अन्नों के उत्पादन का ज्ञान प्राप्त किया।
वेदों में सर्वप्रथम जी की खेती का वर्णन है। इन्द्र तथा मरूत के द्वारा सरस्वती नदी के किनारे पर जी की खेती हुई।

**इमं देवा मधुना संयुतं यवं (अथर्ववेद (6/30) / 1 )**
**किं वावपनं महत्। भूमिरावपनं महत्। 23/45/46**

कृषिकर्म में भूमि के चयन से लेकर शुद्ध अन्न को ग्रहण करने तक विज्ञान छिपा है, जिसमें भूमि चयन, उत्तम बीज, धूप, वायु, जल वर्षा आदि शामिल हैं।
कृषि और यज्ञों के बीच आध्यात्मिक सम्बन्ध है। गीता में वर्णित है-

**अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः ।**
**यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ।। (श्रीमद्भगवद्गीता /3/14)**

सभी प्राणी अन्न पर आश्रित है. और वह अन्न वर्षा से उत्पन्न होता है. वर्षा यज्ञों के सम्पादन से होती है, और यह नियत कर्मों से सम्भव है।

## 6. धातु विज्ञान

चातु विज्ञान वैदिक काल से ही मनुष्य के व्यावहारिक जीवन में उपयोगी रहा है। वैदिक काल में धातुओं से निर्मित विभिन्न उपकरणों का प्रयोग युद्ध एवं कृषि में किया जाता था तथा यंत्रों के अतिरिक्त यातायात के लिए उपयोगी यंत्र रथ, नौका, विमान आदि का प्रयोग होता था। ऋग्वेद में सोने को हिरण्य कहा जाता है, तथा ऋग्वेद में स्वर्ण, चाँदी तथा ताँबे के साथ बनी मिश्र धातुओं का वर्णन है। यजुर्वेद के अनुसार धातु को अग्निकुंड से प्राप्त किया जाता था-

**"अश्मा च में मृत्तिका च मे गिरयश्चमे**
**पर्वताश्च मे सिकताश्च मे वनस्पतयश्च मे।**
**हिरण्यं च मेऽयश्च मे श्यामंच मे**
**लोहञ्च मे सीसंश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।। (यजुर्वेद 18/13)**

अर्थात हर प्रकार के हीरे, मिट्टियों, पर्वत, वनस्पतियाँ, सुवर्ण, ताँबा, श्यामलोह, लाल-लोह एवं सीसा-ये सभी यज्ञ से प्राप्त हों, बृहदारण्यकोपनिषद् में जलते कोयले को निकालने के लिए चिमटे का वर्णन है

**"शाकल्येति होवाच याज्ञवल्क्यस्त्वा स्विदिमे ब्राह्माणा अङ्गारावक्षयणमक्रता इति (बृहदा० 3/9/18)**

शतपथ ब्राह्मण में धातु निर्मित फुंकनियों का उल्लेख है जिसके प्रयोग से ज्वाला प्रज्ज्वलित की जाती थी। कठोपनिषद में अणु तथा परमाणु का वर्णन है

**'अणोरणीयान्महतो महीयानात्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम्। (क 1/2/20)**

सुश्रुत संहिता में धातुओं से बनने वाले 100 से अधिक उपकरणों का वर्णन है जो 'शल्यचिकित्सा में प्रयुक्त होते हैं। ऋग्वेद और अथर्ववेद में धातुओं के प्रयोग का विशेष उल्लेख किया गया है। इनमें सोना, चांदी, तांबा, लोहा और कांस्य जैसी धातुओं के गुणों और उनके प्रयोगों का वर्णन मिलता है। धातुओं को शुद्ध करने, मिश्र धातु बनाने और उनसे विविध प्रकार के उपकरणों और सजावटी वस्तुओं का निर्माण करने के तरीकों का भी वर्णन किया गया है।

## 7. वृष्टि विज्ञान

वेदों में वृष्टि विज्ञान से संबद्ध पर्याप्त सूक्त तथा मन्त्रों का वर्णन है। वृष्टि विज्ञान मेघों के रूप, यज्ञादि कर्म से वृष्टि, वर्षा की उपयोगिता आदि का विषय है। ज्योतिष शास्त्र में वृष्टि के ज्ञात हेतु पाँच अवयवों का उल्लेख है वायु, मेध, ग्रहचार, भूमि एवं सद्योवृष्टि। प्राचीन आचार्यों के मतानुसार वर्षा कब होती है, किस तिथि, नक्षत्र, मास में वर्षा संभव है, तथा वर्षा किस तिथि में होने से लाभ तथा नुकसान होता है. इसका वर्णन वेदों से प्राप्त होता है. शतपथ ब्राह्मण में सूर्य की किरणों को वृष्टि दाता कहा गया है-

**'मरुतो वै वर्षस्येशते,' (शत. 9/1/2/5)**
**मनु के मतानुसार 'अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यग आदित्यमुपतिष्ठते ।**
**आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः (मनु. 3/76)**

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

**Special Issue 01 | Vol.: 12 | June 20, 2025 | Pages: 01–11 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |**

अग्नि में दी हुई आहुति भगवान सूर्य को प्राप्त होती हैं और सूर्य की कृपा से वृष्टि होती है तथा उसी दृष्टि से अन्न उत्पन्न होता है और अन्न से प्रजा का पालन होता है। ऋग्वेद में मन्त्र प्राप्त होता है कि सूर्य की किरणों से जल भाप रूप में आकाश में जाता है और वही जल वृष्टि के रूप में पृथ्वी पर नीचे आता है जिससे धरती पूरी तरह भीग जाती है।

**"कृष्णं नियानं हरयः सुपर्णा अपो वसाना दिवमुत्पतन्ति, (ऋग्वेद. 1/164/47)**

प्राचीन काल में वर्षा न होने पर 'पर्जन्यसूक्त का पाठ किया करते थे तथा उसके पाठ से वर्षा होती थी। पर्जन्यसूक्त ऋग्वेद के पाँचवें मंडल का 83वीं सूक्त है (ऋग्वेद 5/83)। ऋग्वेद में वृष्टि परआधारित सातवें मंडल का 101 वो तथा 102 वीं सूक्त भी प्राप्त होता है, ऋग्वेद में अतिवृष्टि को रोकने के लिए भी मन्त्र द्वारा प्रार्थना की है

**"अवर्षीर्वर्षमुटु धू गृभाय०" (ऋग्वेद (5/83) / 10 )**

## 8. पर्यावरण विज्ञान

प्राचीन भारतीय ज्ञान में प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन पर जोर दिया गया है। आज जब पर्यावरणीय संकट गहराता जा रहा है, भारतीय प्राच्य ज्ञान में वर्णित प्रकृति संरक्षण और सतत विकास के सिद्धांत अधिक प्रासंगिक हो रहे हैं। पंचमहाभूतों के प्रति सम्मान और उनका संतुलन बनाए रखने की शिक्षा आज भी महत्वपूर्ण है। सामान्यतः पृथ्वी के चारों ओर के आवरण को 'पर्यावरण कहते हैं, पर्यावरण वह परिवृत्ति है जिससे मानव चारों ओर से घिरा हुआ है तथा यह मानव जीवन की समस्त क्रियाओं को प्रभावित करती है। जगत में विद्यमान समस्त वनस्पतियों, पशु-पक्षी आदि मनुष्य का पर्यावरण हैं। वेदों में पर्यावरण संरक्षण पृथ्वी, जल, वायु, आकाश की शुद्धि, तथा इनको प्रदूषण से बचाने के लिए अनेक मंत्रों में निर्देश प्राप्त होते हैं। अथर्ववेद में पर्यावरण के तीन संघटक तत्वों का वर्णन है जल, वायु तथा ओषधियाँ, ये तीनों प्राणिमात्र को प्रसन्नता देते हैं तथा इनको अथर्ववेद में 'छन्द' कहा गया है। ये तत्व जीवन रक्षा के लिए उपयोगी है.

**त्रीणि छन्दांसि कवयो वि येतिरे पुरुरूपं दर्शतं विश्वचक्षणम्।**
**आपो वाता ओषधयः तान्येकस्मिन् भुवन आर्पितानि ।। (अथर्ववेद 18/1/17)**

अधर्ववेद में ही अन्तरिक्ष में व्याप्त सूर्य और वायु के महत्त्व का वर्णन है तथा कहा गया है- तुम दोनों संसार के रक्षक हो और तुम ही समस्त रोगों को नष्ट करते हो **'युवं वायो सविता च भुवनानि रक्षथः, (अ० (4/25) / 3 )** अथर्ववेद में वायु के दो गुणों का वर्णन है-प्राणवायु तथा अपानवायु। प्राणवायु मनुष्य में संचार करती है तथाँ अपानवायु मनुष्य शरीर के सभी दोषों को नष्ट करती है। वायु को 'विश्वभेषज' कहा है क्योंकि यह रोगों तथा दोषों का नाश करती है।

**'आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद् रपः ।.**
**त्वं हि विश्वभेषज देवानां दूत ईयसे। (अथर्व. (4/13) / 3 )**
**ऋग्वेद में वायु को रोगों की ओषधी कहा है-**
**'यददो वात ते गृहे अमृतस्य निधिर्हितः**
**तेन नो देहि जीवसे। (ऋग्वेद (10/186) / 3 )**

ऋग्वेद में वायु प्रदूषण रोकने के प्राप्त होता है कि वायु में अमृत है उसे नष्ट न होने दो।

**नु चित्नु वायोरमृतं वि दस्येत्, (ऋग्वेद (6/37) / 3 )**

यजुर्वेद में जल और वनस्पतियों को कहा है **'सुमित्तिया न आप ओषधयः सन्तु ।** (यजुर्वेद 36/23 )
धनुर्वेद में वृक्ष आदि को हानि न पहुँचाने का तथा जल को दूषित न करने का निर्देश है-

**'माऽपो हिंसीः, मा ओषधीहिंसीः' (यजुर्वेद 6/22 )**

पर्यावरण शुद्धि के लिए अथर्ववेद में कहा जहाँ पर्यावरण शुद्ध रहता है वहाँ मनुष्य, पशु-पक्षी आदि सुखपूर्वक जीवित रहते है-

**'सर्वो वै तत्र जीवति गौरवः पुरुषः पशुः ।**
**यत्रेदं ब्रह्म क्रियते परिधिर्जीवनाय कम् ।। (अथर्व० (8/2) / 25 )**

भारतीय प्राच्य ज्ञान धर्म, विज्ञान और पर्यावरण सामंजस्य स्थापित करता है। वर्तमान में यह समन्वय सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में अत्यधिक प्रासंगिक है। वैदिक सिद्धांतों में पर्यावरणीय संतुलन और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण का विशेष ध्यान रखा गया है. जो आज की वैश्विक पर्यावरणीय चिंताओं का समाधान प्रदान कर सकते हैं।

## 9. ध्वनि विज्ञान और मंत्रविद्या

भारतीय प्राच्य ज्ञान में ध्वनि विज्ञान और मंत्रों की शक्ति का गहरा आध्ययन किया गया है। ध्वनिविज्ञान और मंत्र विद्या प्राचीन भारतीय परंपराओं में गहरे निहित हैं। मंत्रों का उच्चारण जो विशेष ध्वनियों और शब्दों का संयोजन होता है, मात्र धार्मिक और

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

**Special Issue 01 | Vol.: 12 | June 20, 2025 | Pages: 01–11 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |**

आध्यात्मिक अभ्यासों का हिस्सा नहीं रहा है, अपितु इसे मानव मन और शरीर पर सकारात्मक प्रभाव डालने वाला भी माना गया है। आधुनिक समय में ध्वनि विज्ञान और मंत्र विद्या का पुनरावलोकन हो रहा है, और इन्हें चिकित्सा, मानसिक स्वास्थ्य और व्यक्तिगत विकास के विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावी पाया जा रहा है। मंत्र विद्या प्राचीन भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। मंत्र, विशेष ध्वनियों और शब्दों का संयोजन होते हैं. जिनका उच्चारण विशिष्ट लय और ताल के साथ किया जाता है। माना जाता है कि मंत्रों का सही उच्चारण और उनकी निरंतर साधना मानव मन, शरीर और आत्मा पर गहरा प्रभाव डाल सकती है। आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान इस दिशा में बढ़ रहे हैं कि मंत्रों का उच्चारण मस्तिष्क की तरंगों पर कैसे प्रभाव डालता है। विशेष ध्वनियों और शब्दों की पुनरावृत्ति मस्तिष्क को एक विशिष्ट अवस्था में ले जाती है, जो ध्यान, एकाग्रता और मानसिक शांति में सहायक हो सकती है। कुछ अध्ययनों से पता चला है कि मंत्रों का उच्चारण तनाव को कम करने, चिंता और अवसाद को नियंत्रित करने में भी सहायक हो सकता है। मंत्रों का उपयोग केवल आध्यात्मिक उद्देश्यों तक सीमित नहीं है. यह चिकित्सीय उद्देश्यों के लिए भी प्रभावी पाया गया है। आधुनिक चिकित्सा प्रणालियों में मंत्रों का उपयोग मानसिक स्वास्थ्य के सुधार के लिए किया जा रहा है। ध्वनि तरंगों के रूप में मंत्रों की कंपने शरीर के विभिन्न ऊर्जा केंद्रों (चक्रों) को संतुलित करने में सहायक मानी जाती हैं। आज ध्वनि विज्ञान और मंत्र विद्या का प्रभाव केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विश्वभर में फैला हुआ है। योग और ध्यान की बढ़ती लोकप्रियता के साथ, मंत्र विद्या का भी वैश्विक प्रसार हो रहा है। पश्चिमी दुनिया में भी संगीत चिकित्सा के रूप में मंत्रों का उपयोग बढ़ रहा है। आधुनिक परिदृश्य में ध्वनि विज्ञान और मंत्र विद्या की प्रासंगिकता को नकारा नहीं जा सकता। ध्वनि के प्रभावों और मंत्रों के उच्चारण के पीछे छिपे विज्ञान का अध्ययन न केवल प्राचीन भारतीय ज्ञान को आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़ता है, अपितु यह मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी नए द्वार खोलता है। यह स्पष्ट है कि आने वाले समय में ध्वनि विज्ञान और मंत्र विद्या का अध्ययन और उसका अनुप्रयोग मानव जीवन की गुणवता में सुधार लाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। आज, म्यूजिक थेरेपी और साउंड हीलिंग में वैदिक मंत्रों और ध्वनि के प्रभाव का प्रयोग किया जा रहा है। वैदिक मंत्रों का उच्चारण मानसिक शांति, ध्यान और उपचार प्रक्रियाओं में सहायक माना जा रहा है।

### 10. धर्मशास्त्र और न्याय

प्राचीन भारतीय धर्मशास्त्र जैसे मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, और नारद स्मृति, सामाजिक और नैतिक न्याय के सिद्धांत प्रदान करते हैं। आधुनिक कानूनी प्रणाली में इन्हें सामाजिक न्याय, नैतिकता, और पारिवारिक कानून के संदर्भ में अध्ययन किया जा रहा है, और इनसे प्रेरणा ली जा रही है। धर्म शास्त्र प्राचीन भारतीय सभ्यता का एक महत्वपूर्ण अंग रहा है, जो समाज के नैतिक, धार्मिक, और कानूनी ढांचे को निर्धारित करता है। ये शास्त्र, जिसमें मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, और नारद स्मृति जैसे ग्रंथ शामिल हैं, व्यक्ति और समाज के आचरण, कर्तव्यों, और दायित्वों को परिभाषित करते हैं। यद्यपि इन ग्रंथों का उदभव प्राचीन काल में हुआ था, लेकिन उनकी प्रासंगिकता और उनके सिद्धांत आज भी आधुनिक भारतीय न्याय प्रणाली और समाज के नैतिक ढांचे में परिलक्षित होते हैं। धर्म शास्त्र उन नियमों और कर्तव्यों का संग्रह है, जो व्यक्ति और समाज के व्यवहार को नियंत्रित करते थे। इन शास्त्रों ने समाज में विभिन्न वर्गों, लिंगों, और आयु वर्गों के लिए विशिष्ट कर्तव्यों और आचार संहिताओं का निर्धारण किया। इसके साथ ही ये शास्त्र धार्मिक, नैतिक और सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को परिभाषित करते थे, जिससे समाज में शांति, समृद्धि और न्याय सुनिश्चित होता था। भारतीय संविधान और आधुनिक न्याय प्रणाली की जड़ें काफी हद तक धर्म शास्त्रों में निहित हैं। यद्यपि स्वतंत्रता के बाद भारत ने धर्म और राज्य के बीच एक स्पष्ट भेद स्थापित किया है परन्तु अनेक कानूनी और सामाजिक नियम धर्म शास्त्रों से प्रेरित रहे है। उदाहरण के लिए, हिंदू विवाह अधिनियम, हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, और अन्य व्यक्तिगत कानूनों में धर्म शास्त्रों के तत्व स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

वर्तमान में न्यायालयों में धर्म शास्त्रों का उपयोग धार्मिक और व्यक्तिगत मामलों में दिशा-निर्देश के रूप में किया जाता है। विशेष रूप से पारिवारिक विवादों, विवाह और संपत्ति के मामलों में धर्म शास्त्रों के सिद्धांतों का परामर्श लिया जाता है। यद्यपि ये शास्त्र अब कानूनी मान्यता प्राप्त प्राथमिक स्रोत नहीं है तथापि वे सांस्कृतिक और नैतिक संदर्भ में महत्वपूर्ण है। धर्म शास्त्रों के सकारात्मक और सार्वभौमिक सिद्धांतों को समकालीन सामाजिक और कानूनी ढांचे में समाहित करना महत्वपूर्ण है. जिससे हम एक न्यायपूर्ण, समतावादी और नैतिक समाज का निर्माण कर सकें।

### 11. नृत्य और कला

भारतीय नृत्य और कला की परंपराएँ, जैसे भरतनाट्यम्, कथक, और कर्नाटक संगीत, भारतीय प्राच्य ज्ञान का अभिन्न हिस्सा है। भारतीय नृत्य और कला की परंपरा प्राचीन काल से ही समृद्ध रही है। ये कलाएँ सांस्कृतिक धरोहर होने के साथ ही मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक संतुलन बनाए रखने के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। आधुनिक समय में ये कलाएँ न केवल भारतीय समाज में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी अपनी पहचान बना रही हैं। आधुनिक परिदृश्य में, भारतीय नृत्य और कला ने न केवल राष्ट्रीय अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बनाई है। भारतीय नृत्य, जिसमें शास्त्रीय और लोक नृत्य दोनों शामिल है. एक समृद्ध

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

**Special Issue 01 | Vol.: 12 | June 20, 2025 | Pages: 01–11 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |**

सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है। भरतनाट्यम, कथक, कुचिपुड़ी, ओडिसी, मणिपुरी, और मोहिनीअट्टम जैसे शास्त्रीय नृत्य रूपों ने भारतीय संस्कृति को संरक्षित करने के साथ नई पीढ़ियों के लिए सजीव बनाए रखा है।

आधुनिक युग में ये नृत्य रूप अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बना चुके हैं। भारतीय शास्त्रीय नृत्य का प्रदर्शन केवल मंदिरों और सभागारों तक सीमित नहीं है, यह विभिन्न मंचों, जैसे अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक उत्सवों, कला दीर्घाओं और डिजिटल प्लेटफार्मों पर भी दिखाया जा रहा है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नृत्य और कला का एक महत्वपूर्ण स्थान है। ये केवल सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ नहीं है. अपितु विद्यार्थियों के समग्र विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। कला और नृत्य शिक्षा से विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, समस्या समाधान कौशल और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास होता है। भरत मुनि का नाट्यशास्त्र भारतीय शास्त्रीय साहित्य का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जो नाटक, नृत्य, संगीत और अभिनय के सिद्धांतों का संपूर्ण विवरण प्रस्तुत करता है। इसे प्राचीन भारतीय नाट्यकला का आधारभूत ग्रंथ माना जाता है, और यह आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना प्राचीन काल में था। आधुनिक नाट्यकला और सिनेमा में भरत मुनि के नाट्यशास्त्र के सिद्धांतों का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। अभिनय के सिद्धांत, जैसे आंगिक, वाचिक, आहार्य और सात्त्विक अभिनय, वर्तमान में भी नाट्यकला और फिल्मों में कलाकारों द्वारा अपनाए जाते हैं। आधुनिक रंगमंच की तकनीकें, जैसे कि मंच सज्जा, प्रकाश व्यवस्था, संगीत, और नृत्य, नाट्यशास्त्र के विभिन्न अध्यायों पर आधारित है। रंगमंच में रस की अवधारणा जो दर्शकों के मन में विभिन्न भावनाओं को उत्पन्न करने का सिद्धांत है. आज भी नाटकों और प्रदर्शनों में अनिवार्य मानी जाती है। भरत मुनि का नाट्यशास्त्र समाज को प्रतिबिंबित करने और उसमें बदलाव लाने का माध्यम रहा है। नाटधशास्त्र के अध्ययन को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भी शामिल किया गया है। विभिन्न नाट्ध और फिल्म अध्ययन कार्यक्रमों में भरत मुनि के सिद्धांतों का गहन अध्ययन किया जाता है, जो विद्यार्थियों को भारतीय नाटथकला की समृद्ध परंपरा से परिचित कराते हैं। भरत मुनि के नाट्यशास्त्र को न केवल भारत में, अपितु सम्पूर्ण विश्व में मान्यता प्राप्त है। नाट्यशास्त्र की बहुआयामी दृष्टि ने इसे वैश्विक रंगमंच और सिनेमा में महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है।

## 12. आर्थिक सिद्धांत और व्यापार

भारतीय प्राच्य अर्थशास्त्र और व्यापार की परंपरा विश्व की सबसे पुरानी और समृद्ध परंपराओं में से एक है। प्राचीन भारत के व्यापारिक केंद्र और आर्थिक सिद्धांत भारत की समृद्धि का कारण बने तथा वैश्विक अर्थव्यवस्था पर भी अपना गहरा प्रभाव डाला। वर्तमान में जब वैश्विक अर्थव्यवस्था में तेजी से बदलाय हो रहे हैं. भारतीय प्राच्य अर्थशास्त्र और व्यापार की परंपराएं फिर से प्रासंगिक हो रही हैं, विशेषकर जब हम आत्मनिर्भरता, सतत विकास और वैश्विक व्यापार के संदर्भ में विचार करते हैं।

प्राचीन भारतीय अर्थशास्त्र में कृषि, हस्तशिल्प, व्यापार एवं कर-प्रणाली का एक सुव्यवस्थित ढांचा था। कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' इस संदर्भ में एक प्रमुख ग्रंथ है, जो राज्य की आर्थिक नीतियों तथा व्यापार, कराधान और वित्तीय प्रबंधन के सिद्धांतों का भी विस्तार से वर्णन करता है। आधुनिक भारत में जब हम एक वैश्विक आर्थिक शक्ति बनने की ओर अग्रसर हैं, प्राच्य अर्थशास्त्र के सिद्धांत फिर से ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' राज्य नीति, वित्तीय प्रबंधन एवं आर्थिक विकास की रणनीतियों के संदर्भ में प्रासंगिक है।

भारतीय प्राच्य व्यापारिक परंपरा ने भारत को ऐतिहासिक रूप से वैश्विक व्यापार के केंद्र में रखा। भारत की निर्यात नीति, वैश्विक साझेदारियों, और व्यापारिक संबंधों में यह परंपरा पुनर्जीवित हो रही है। विभिन्न सेवाओं में भारत की वैश्विक स्थिति, इस बात का प्रमाण है कि प्राचीन व्यापारिक तंत्र एवं आधुनिक प्रौद्योगिकी का संयोजन किस प्रकार से भारत को वैश्विक व्यापार में अग्रणी बना सकता है। आधुनिक परिदृश्य में भारतीय प्राच्य अर्थशास्त्र और व्यापार की प्रासंगिकता निर्विवाद है। प्राचीन भारत के आर्थिक और व्यापारिक सिद्धांत न केवल ऐतिहासिक महत्व रखते हैं, अपितु वे आज भी एक सशक्त और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में सहायक हो सकते हैं। भारत की वैश्विक व्यापारिक पहचान और अर्थव्यवस्था को स्थायित्व प्रदान करने के लिए, हमें अपने प्राच्य अर्थशास्त्र के सिद्धांतों को आधुनिक संदर्भ में पुनः परिभाषित और लागू करना होगा।

## 13. आध्यात्मिक पर्यटन और वैदिक शिक्षा

आधुनिक समय में आध्यात्मिक पर्यटन का महत्व बढ़ रहा है, जिसमें लोग प्राचीन भारतीय तीर्थ स्थलों, आश्रमों और गुरुकुलों की यात्रा कर रहे हैं। इसके साथ ही वैदिक शिक्षा के पुनरुत्थान के प्रयास हो रहे हैं, जहाँ प्राचीन ज्ञान को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में एकीकृत करने के प्रयास किए जा रहे हैं। आधुनिक युग में जब मानव तनाव, असंतोष एवं मानसिक अशांति जैसी समस्याओं का सामना कर रहा है, आध्यात्मिकता और वैदिक ज्ञान की ओर आकर्षण बढ़ता जा रहा है। भारत, जिसे आध्यात्मिकता की भूमि कहा जाता है, शताब्दियों से अपने धार्मिक स्थलों के साथ अपनी गहन वैदिक परंपराओं के लिए भी विश्व भर में विख्यात रहा है। प्राच्य भारतीय आध्यात्मिक पर्यटन और वैदिक अध्ययन की महत्ता पुनः स्थापित हो रही है, और यह मात्र भारतीयों के मध्य ही नहीं अपितु अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में भी लोकप्रिय हो रहा है। आध्यात्मिक पर्यटन का उद्देश्य मात्र भौतिक स्थलों का दर्शन करना नहीं है, अपितु यह मानसिक और आध्यात्मिक शांति प्राप्त करने का एक मार्ग है। भारत में स्थित विभिन्न धार्मिक और आध्यात्मिक स्थलों, जैसे कि वाराणसी, ऋषिकेश, हरिद्वार, तिरुपति, पुरी, और बोधगया आदि अनेक प्राचीन महत्त्व के स्थलों में

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

**Special Issue 01 | Vol.: 12 | June 20, 2025 | Pages: 01–11 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |**

पर्यटकों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। भारत के हिमालयी क्षेत्र, जिनमें ऋषिकेश और धर्मशाला प्रमुख हैं, योग, ध्यान और वैदिक अध्ययन के लिए विश्व प्रसिद्ध हो चुके हैं। ये स्थान भारतीयों के साथ ही विदेशियों के लिए भी एक आकर्षण का केंद्र बन गए हैं, जो यहां आकर योग और ध्यान की प्राचीन विद्या में दीक्षित होते हैं।

वैदिक अध्ययन, जो भारत की प्राचीन विद्या और ज्ञान का प्रतीक है, आज के आधुनिक परिदृश्य में अत्यधिक प्रासंगिक हो गया है। वेद, उपनिषद और भगवद गीता, में जीवन के गहन रहस्यों, प्रकृति के नियमों, और मानव अस्तित्व के मूल्यों का विस्तार से वर्णन है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में वैदिक अध्ययन को पुनः स्थापित करने के प्रयास हो रहे हैं जिससे भावी पीढ़ियों इस प्राचीन ज्ञान से परिचित हो सकें।

भारतीय आध्यात्मिकता और योग का वैश्विक स्तर पर प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की मान्यता इस बात का प्रमाण है कि भारतीय योग और ध्यान की परंपराएँ अब वैश्विक स्वास्थ्य और मानसिक शांति के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण मानी जा रही हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय गुरुओं और आध्यात्मिक नेताओं की लोकप्रियता भी इस बात का संकेत है कि भारतीय आध्यात्मिक परंपराएँ आधुनिक समाज के लिए कितनी प्रासंगिक हैं। इन परंपराओं के माध्यम से लोग जीवन के अर्थ और उद्देश्य को समझने का प्रयास कर रहे हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली मेंवैदिक अध्ययन का समावेश नई पीढ़ी को अपने सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर से जोड़ने का एक महत्वपूर्ण साधन है। इससे विद्यार्थियों में न केवल आत्म-चिंतन और आत्मावलोकन के गुण विकसित होते हैं, अपितु यह उन्हें अपने जीवन के मूल्यों और उद्देश्यों को समझने में भी सहायता करता है। समाज में नैतिकता और सांस्कृतिक मूल्यों के पुनरुत्थान के लिए भी वैदिक अध्ययन का महत्व अत्यधिक है। यह समाज में सद्भाव, सहयोग और समरसता को बढ़ावा देने का एक सशक्त माध्यम हो सकता है। आधुनिक परिदृश्य में भारतीय प्राच्य आध्यात्मिक पर्यटन और वैदिक अध्ययन की महत्ता निर्विवाद है। ये मात्र आंतरिक शांति और संतुलन प्राप्त करने के साधन नहीं हैं, अपितु मानवता को नैतिकता, अनुशासन, और आत्म-साक्षात्कार की दिशा में मार्गदर्शन करने का भी कार्य करते हैं। यह आवश्यक है कि हम इन प्राचीन परंपराओं को संजोए रखें और उन्हें आधुनिक संदर्भ में पुनः परिभाषित करें, जिससे वे आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनी रहें।

## निष्कर्ष

भारतीय प्राच्य ज्ञान मात्र प्राचीन इतिहास का हिस्सा नहीं है, अपितु यह आधुनिक युग की जटिलताओं का सामना करने और नई दिशा देने के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारतीय प्राच्य ज्ञान का अध्ययन और उसका सही उपयोग आने वाले समय में समाज के विकास और कल्याण के लिए अभूतपूर्व योगदान दे सकता है। पारंपरिक भारतीय विज्ञान चारों वेद और उनके समस्त अंग-उपांग एवं उनके सिद्धान्त, जो अनेक शास्त्रों में विस्तृत रूप से वर्णित है, हमें भव्य ज्ञान-विज्ञान का दर्शन कराते है तथा हमें स्थूलता से सूक्ष्मता का अभिज्ञान कराते हैं। प्राचीन विज्ञान के प्रयोग के तरीके वर्तमान तरीकों से भिन्न थे तथापि उनका विज्ञान पूरी तरह से वर्तमान विज्ञान को दिशा देने में सक्षम है। पारंपरिक भारतीय विज्ञान ने आधुनिक विज्ञान के क्षेत्रों में भी अनूठी दृष्टि प्रदान की है। वेद ही विज्ञान के अपूर्व भण्डार है। मनु कहते हैं 'सर्वज्ञानमयो हि सः' वैदिक मन्त्रों में विज्ञान का ज्ञान समाहित है। यह ज्ञान परंपरा सुख-शांति, आनंद और समृद्धि के लिए प्रेरणा स्रोत है। भारतीय ज्ञान के आधार पर किये गए नवाचार इस परंपरा की निरंतरता का प्रमाण है। यह अविरल ज्ञानधारा एक विशुद्ध और अविनाशी धारा है, जो हमें जीवन-मूल्यों के साथ-साथ वैज्ञानिक ज्ञान भी प्रदान करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा, जो कि युगों-युगों से संचित और परिष्कृत होती आई है. हमारी सांस्कृतिक एवं बौद्धिक विरासत की अनमोल निधि है। इस परंपरा में समाहित गूढ़ दर्शन, वैज्ञानिक अनुसंधान, आध्यात्मिक चिंतन और साहित्यिक अभिव्यक्ति मानव सभ्यता के उत्कर्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं। आयुर्वेद, योग, वास्तुशास्त्र और संस्कृत वाङ्मय जैसे क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान की उपयोगिता निर्विवाद है। यह हमारे जीवन के विभिन्न आयामों में संतुलन और समरसता स्थापित करने का मार्ग प्रदर्शित करने के साथ ही सतत विकास, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों को भी सशक्त करती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के सार में निहित तत्व समय के साथ और अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। इसका दार्शनिक दृष्टिकोण, जो आत्मा, प्रकृति और ब्रह्मांड के अंतर्संबंधों को गहराई से समझने की कोशिश करता है, वर्तमान में वैज्ञानिक और आध्यात्मिक विमर्शों में नई दिशा प्रदान कर सकता है। इसके साथ ही भारतीय साहित्य और कला में निहित सृजनात्मकता और सौंदर्यबोध नई प्रेरणा का संचार करती है, जो समकालीन सांस्कृतिक पुनर्जागरण में सहायक हो सकती है।

इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा की उपयोगिता अद्वितीय और बहुआयामी है। यह हमारी जड़ों से जुड़ी होने के साथ-साथ हमें आधुनिकता से भी जोड़े रखती है। वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों का सामना करने में यह ज्ञान परंपरा हमें मात्र दिशा ही नहीं दिखाती अपितु हमारे भीतर निहित असीम संभावनाओं का भी उद्घाटन करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा की इस निरंतरता और प्रासंगिकता को समझना और उसे आत्मसात करना आज के वैश्विक समाज के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

International Refereed, Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary & Open Access Research Journal

**Special Issue 01 | Vol.: 12 | June 20, 2025 | Pages: 01–11 | RRSSH | ISSN: 2348 – 3318 |**

## संदर्भ

1 छान्दोग्योपनिषद्
2 व्याख्याकार डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चरक संहिता
3 अथर्ववेद
4 डॉ० कर्ण सिंह, वैदिक साहित्य का इतिहास -
5 डॉ० कपिल देव द्विवेदी, वेदों में विज्ञान
6 सिद्धान्त तत्व विवेक
7 वृहद् विमान शास्त्र
8 ऋग्वेद
9 यजुर्वेद
10 सामवेद
11 श्रीमद्भगवद्गीता
12 भरत मुनि, नाट्यशास्त्र
13 कौटिल्य, अर्थशास्त्र
14 प्रो० बलंवत सिंह राजपूत, हिस्टोरिकल कल्चर एण्ड साइंटिफिक हेरिटेजेस ऑफ इंडिया (अनुपम भारत)

*** ***